



Original Article

आखिरी छलांग उपन्यास में चित्रित कृषक समस्याएँ

प्रा. दादासो बंडू बोडरे

सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

प्रा. डॉ एन डी पाटील महाविद्यालय, मलकापुर-पेरीड

Manuscript ID:

IJAAR-C130341

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 204 - 207

Submitted: 27 Jan.2026

Revised: 06 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. दादासो बंडू बोडरे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786044

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786044>



Creative Commons



सार:

कृषक वह व्यक्ति है जो कृषि या खेती करता है। वह खेती बाड़ी का काम करता है। खेतों को जोतने उनमें बीज बोने तथा होने वाली फसल को काटने आदि का काम करते हैं। वस्तुतः समकालीन कथा साहित्य में मुख्य रूप से कृषक जीवन की अनुभूति दिखाई पड़ती है। क्योंकि आज के समय की सबसे बड़ी त्रासदी किसान लोग ही झेल रहे हैं। शिवमूर्ती कृत 'आखिरी छलांग' उपन्यास नया ज्ञानोदय पत्रिका के जनवरी 2008 अंक में सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ है। एक लघु उपन्यास का रूप लिए यह कथा किसान जीवन के सभी पहलुओं को उजागर करती है। किसान की बेबसी और उसके बाद उस बेबसी से उपजी आखिरी लड़ाई की कहानी को छलांग के रूप में दर्शाया है। उपन्यास का नायक है पहलवान जो एक किसान है और उसका जीवन किसान समस्याओं से जूझता नजर आता है, जिसमें कहीं समस्या के रूप में खेती है, तो कहीं उस पर होने वाले खर्च, तो कहीं अपनी बिटिया के लिए वर की तलाश, जो दहेज के कारण पूरी नहीं हो पा रही, तो कहीं बेटे की पढ़ाई का खर्चा इसके अलावा सरकारी ऋण भी उसके जीवन की गति को बांध बनकर रोकता हुआ नजर आता है।

मुख्य शब्द: किसान, सरकार, कर्ज, संघर्ष, समस्या, आत्महत्या

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. दादासो बंडू बोडरे. (2026). आखिरी छलांग उपन्यास में चित्रित कृषक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 204 - 207. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786044>

प्रस्तावना:

आखिरी छलांग उपन्यास में चित्रित कृषक समस्याएँ:

1. बिजली समस्या: किसान को अपनी खेती को पानी देने के लिए दिन में बिजली की आवश्यकता रहती है लेकिन वह नहीं रहती। ठंडी के दिनों में बिजली आती है, वह भी आधी रात

को। रात भर किसान को ठंडी में खेती को पानी देना पड़ता है। उपन्यास का पात्र पहलवान की पत्नी, महादेव किसान की अवस्था का वर्णन करती है “पहले की दो रातों में महादेव ने सिंचाई किया और सर्दी खाकर लेट गए। जाड़े की रातों में टोर्च की रोशनी में खेत बेराना छः सात घंटे पानी और कीचड़ में



हाथ पैर सानना जवान आदमी का शरीर भी अकड़ जाएगा।¹ किसानों को जाड़ों की रात में अपनी खेती के लिए पानी देना पड़ता है। जाड़ों की रात में उनका शरीर ठंड से अकड़ता है। किसान को शारीरिक कष्ट झेलने पड़ते हैं। किसानों के लिए दिन में बिजली की आवश्यकता है लेकिन ऐसा होता नहीं। चारों तरफ से किसान समस्याओं से ग्रस्त है सरकार को उनकी तरफ ध्यान देना जरूरी है। भारत देश में सभी जगह किसान की यही अवस्था है।

2. सरकारी नीतियों का किसान पर असर: कोई भी व्यावसायिक अपने माल की कीमत स्वयं तय करता है। वह वस्तु कितने में बेचनी है, देनी है, यह व्यापारी स्वयं तय करता है। किसानों को अपने माल की कीमत तय करने का अधिकार नहीं है। वह सरकार तय करती है या व्यापारी मोलभाव करता है। पहलवान सरकार की नीतियों के बारे में कहता है “बहुत सारे मुद्दे हैं, लड़ना जरूरी है, जैसे सरकारी नीतियां गेहूं पैदा करने में लागत बारह रुपए किलो आती है लेकिन गेहूं बिकता है सात रुपए किलो आलू और प्याज किसान के घर पैदा होता है, तो दो रुपए किलो बिकने लगता है। दो महीने बाद जैसे किसान के घर से बाहर निकला दस रुपए किलो हो जाता है। पिछले पैंतीस सालों में जमीन दुगनी महंगी हो गई है, सोना पचहत्तर गुना, डीजल पचास गुना, जब की गेहूं सिर्फ सात गुना”² यही हाल आज भी देखा जा सकता है किसान की चीजों की कीमतें वैसे ही है। सोना, डीजल, पेट्रोल आदि की कीमते आसमान छू रही है। जब तक सरकार किसान के माल का भाव वास्तविकता की धरातल पर आकर नहीं करती है तब तक किसानों के माल को उचित न्याय नहीं मिल सकता।

3. शासन द्वारा किसानों की उपेक्षा: भारत कृषि प्रधान देश है लेकिन आज इस किसान की अवस्था दयनीय है। पाश्चात्य देशों में जिस प्रकार किसान के लिए ढेर सारी योजनाएं बनाई

जा रही है उस प्रकार हमारे देश में किसान उपेक्षा का पात्र रहा है। प्रस्तुत उपन्यास आखिरी छलांग का प्रमुख पात्र पहलवान सरकार की व्यवस्था के बारे में कहता है, “पश्चिम के देशों में किसानों को भारी सब्सिडी दी जाती है। सस्ती दर पर खाद बिजली देते हैं। मैं कहीं पढ़ा था अमेरिका अपनी गायों को रोज चोबीस डॉलर की सब्सिडी देता है।”³ हम देख सकते हैं कि पाश्चात्य देशों में किसान अपना विकास कर रहे हैं। सरकार द्वारा उन्हें अनेक योजनाएं दी जा रही है। पाश्चात्य देशों में कृषि उत्पादन करने वाले किसान को मौसम, बाजार मूल्यों और अन्य कारकों में बदलाव के कारण साल-दर-साल कृषि उत्पादन और लाभ में होनेवाले उतार चढ़ाव को प्रबंधित करने के लिए किसान को मदद कि जाती है, इसी कारण उनका आर्थिक स्तर बढ़ा हुआ है। हमारा किसान आर्थिक तंगी में फंसा हुआ है। उसका सामाजिक आर्थिक स्तर गिरा हुआ है।

4. कर्ज में डूबा किसान: किसान को खेती का खर्चा उठाने के लिए निजी साहूकार, बैंक से कर्ज लेना पड़ता है। अपनी ज़रूरतें पूरी करनी पड़ती है। फसल की पैदावार तो होती है लेकिन कर्ज का भुगतान नहीं कर पाता। जितनी फसल होती है उससे ज्यादा खर्चा होता है। इसी कारण उसे अगले साल फिर कर्जा लेने की नौबत आती है। उपन्यास का प्रमुख पात्र पहलवान इस संदर्भ में कहता है, “पिछले साल बेटी ब्याहने के लिए खेत गिरवी रखना पड़ा। उसके पिछले साल मोटर और पंखा खोलकर ले जाने की धमकी दे गए तो ब्याज सहित बकाया किस्ते एक साथ चुकानी पड़ी। खाद का यह लोन उसके पहले एक साल का है।”⁴ दिन-ब-दिन किसान की जिंदगी बद से बदतर होती जा रही है। यह सिर्फ पहला पहलवान की अवस्था नहीं तो भारत की सभी किसानों की यही दशा है। पहला कर्ज चुकाने के लिए दूसरा, दूसरा चुकाने के लिए तीसरा कर्ज। इस तरह आजीवन वह कर्ज के फेरे में डूबता



रहता है। अंत में जेल जाने की नौबत आती है या इज्जत के कारण आत्महत्या का रास्ता चुनता है।

5. ऋणग्रस्त किसान की आत्महत्या: बैंक के दलाल कर्ज लेने के लिए किसान को मजबूर करते हैं लेकिन किस्त अदा न होने पर खेती की नीलामी करते हैं। जिससे किसान को बहुत दुख होता है। जिससे उसकी रोजी-रोटी चलती है वहीं चली जाएगी, तो वह जिएगा कैसे? उपन्यास का पात्र पांडे बाबा अंत में आत्महत्या करता है। आत्महत्या से पूर्व पांडे बाबा की अवस्था का चित्रण पहलवान करता है, “सारी जमीन असल की एक चौथाई कीमत में नीलाम हो गई अब क्या होगा! कोई दूसरा रोजी रोजगार ना कोई धंधा, चटपटा कर रह गए। सदमा इतना तेज था कि अर्ध विक्षिप्त हो गए। जो भी मिलता उसे पड़कर रोने लगता। पूछते अब मेरे बच्चों को रोटी कैसे मिलेगी? फिर अकेले बड़बड़ाने लगे। आंखों में सूनापन भर गया और एक दिन... फांसी पर लटके पांडे बाबा।”⁵ पुरखों से मिली जमीन कौड़ियों के दाम में बैंकों के कर्ज में नीलाम होने के कारण किसान आत्महत्या करता है, जैसे पांडे बाबा ने की। पत्नी बच्चे की रोजी-रोटी छिन जाएगी तो वह कैसे जिएंगे? आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है और अपना जीवन समाप्त करते हैं। आज भी कुछ बदला नहीं किसान की आत्महत्या की समस्या वैसे ही है। आज भी किसान ऋण की चिंता से उसकी ब्याज से और अपनी खेती नीलाम हो जाने की डर से अपनी जान देता है, आत्महत्या कर लेता है।

6. अन्य समस्याएँ: दहेज के कारण बेटी की शादी की समस्या, बेटे की पढ़ाई की समस्या उसके एडमिशन के लिए पैसा इकट्ठा करना मुश्किल होना, सिंचन की समस्या जिसमें वक्त पर पानी न मिलना, पानी आए तो पूरी खेती की फसल उसके साथ चली जाना, प्राकृतिक आपदा भी किसान को सहन करनी पड़ती है। बारिश आए तो इतनी आती है की सभी

फसल नष्ट हो जाती है और वक्त पर ना आए तो पूरी फसल सूख जाती है। आज के समय में खेती में पारंपारिक साधन जैसे हल, बैल, बछड़े गायब हो चुके हैं। आज इनकी जगह पर ट्रैक्टर थ्रेसर ने अपनी जगह बना ली है। जिनकी कीमत आज आसमान छू रही है। छोटे किसानों के लिए खेती करना और भी मुश्किल होता जा रहा है।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि शिवमूर्ति का आखिरी छलांग उपन्यास किसान जीवन और ग्रामीण समाज की कारुणिक यथार्थ का जीवंत चित्रण है। संवेदनाओं को झकझोरकर किसान जीवन पर सोचने के लिए मजबूर करता है। भारतीय गांव के किसानों की समस्याओं को उजागर करती हैं। मजदूरी, दहेज, जातिवाद, खाद, बीज, पानी, नहर, कर्ज, सिंचन, सरकार की नीतियां, आत्महत्या आदि समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया है। यह सिर्फ यथार्थ की अभिव्यक्ति नहीं देता बल्कि आशावाद को भी प्रकट करता है। संगठन के लिए प्रेरित करता है। प्रस्तुत रचना किसान की वर्तमान स्थिति को पाठक के सम्मुख रखती है। जिसके कारण चिंतनशील पाठक को सिर्फ सोचने के लिए बाध्य नहीं करती बल्कि उसे झकझोरकर रख देती है। अतः आवश्यकता है शासन द्वारा किसानों की समस्याओं पर सही समाधान निकालने की, कि जिसके द्वारा किसानों को बेहतर जिंदगी मिल सके और वो समाज में अपनी बेहतर जिंदगी गुजर- बसर सके।

संदर्भ ग्रंथ:

1. शिवमूर्ति, आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय, अंक जनवरी -2008, पृष्ठ संख्या –101



- | | |
|---|---|
| 2. शिवमूर्ती, आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय, अंक जनवरी
-2008, पृष्ठ संख्या -89 | 5. शिवमूर्ती, आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय, अंक जनवरी
-2008, पृष्ठ संख्या –99 |
| 3. शिवमूर्ती, आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय, अंक जनवरी
-2008, पृष्ठ संख्या -84 | 6. www.shivsmruti.com |
| 4. शिवमूर्ती, आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय, अंक जनवरी
-2008, पृष्ठ संख्या –83 | 7. www.sahchar.com |